A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भारतीय शास्त्रीय संगीत में ग्राम रागों की संकल्पना: एक अध्ययन

Dr. Gian Chand
Associate Professor (Music), Govt. Degree College Dhami, Shimla, Himachal Pradesh

OPEN ACCESS

सारांश

आधुनिक भारतीय शास्त्रीय संगीत की विशुद्ध परम्परा का आधार जाति गायन और ग्राम रागों को माना जाता है । वर्तमान राग संगीत इन्ही परम्परओ का प्रतिफल है। भरत ने केवल सात ग्राम राग गिनाएं है जिन्हें हम शुद्ध ग्राम राग कहते है। मतंग ने ग्राम रागों की सात गीतियां मानी है। भरत के काल या उससे कुछ पश्चात तक भी ग्राम रागों का प्रचार था। इनकी चर्तुगीतियॉ थी जिनमें केवल शुद्ध के विनियोग का उल्लेख भरत ने भी किया है। परवर्तित विकास के रूप में शुद्ध से अतिरिक्त भिन्न आदि चारो गीतों का प्रचार हुआ—–शार्दुल के समय भाषा एक गीति के रूप में प्रचलित थी और याष्टिक के समय तक आते–आते भाषादि तीनों प्रकार अपने विकसित रूप में आएं। मतंग के काल तक एक और नवीन रूप 'रागगीति' भी सम्मुख आई। शारंग देव के लक्षण में इन सभी गीतियों के साथ एक अन्य भेद 'उपराग' भी प्राप्त होता है। शार्ङ्गदेव द्वारा ग्राम रागों के पांच प्रकार माने गए है तथा उनका आश्रय गीतियों में होना माना है।

***कुंजी शब्द**: ग्राम राग, गीति, कैशिक, ओहाटी, गौड़*

शार्ङ्गदेव द्वारा ग्राम रागों के पांच प्रकार माने गए है तथा उनका आश्रय गीतियों में होना माना है।

''पंचधाग्रामरागा: स्यु पंचगीतिसमाश्रयात्''[१]

ग्राम रागों के पांच भेद है: शुद्ध, भिन्न, गौड़, वेसर और साधारण। ''काव्य, नाटक गीत इन सब में रूचि भेद के अनुसार काव्य और रीति, नाटक में वृति और गीत में गीति के भेद हुए पांचो गीतियों के अनुसार ही ग्राम रागों के पूर्वोक्त पांच भेद हुए है''[२]

'Gram-Ragas are related to the two Grama's with the intervention of Jati's only and therefore are more closely affiliated to them as compared to the Bhashas & the later Ragas. Matang raises the question as to why these ragas are related to Gramas and are called Gram Ragas and in reply quotes Bharat who say 'Because the gram ragas are derived from Jatis" (as quoted by K). This statement however, is not to be found in any of the available recensions of N.S."३

भरत ने केवल सात ग्राम राग गिनाएं है जिन्हें हम शुद्ध ग्राम राग कहते है। मतंग ने ग्राम रागों की सात गीतियां मानी है। भरत के काल या उससे कुछ पश्चात तक भी ग्राम रागों का प्रचार था। इनकी चर्तुगीतियॉ थी जिनमें केवल शुद्ध के विनियोग का उल्लेख भरत ने भी किया है। ''परवर्तित विकास के रूप में शुद्ध से अतिरिक्त भिन्न आदि चारो गीतों का प्रचार हुआ——शार्दुल के समय भाषा एक गीति के रूप में प्रचलित थी और याष्टिक के समय तक आते–आते भाषादि तीनों प्रकार अपने विकसित रूप में आएं। मतंग के काल तक एक और नवीन रूप 'रागगीति' भी सम्मुख आई शारंगदेव को लक्षण में इन सभी गीतियों के साथ एक अन्य भेद 'उपराग' भी प्राप्त होता है।[४]

भरत के समय राग गायन का प्रचार हो चुका था, ऐसा अनुमान लगया जा सकता है। यद्यपि भरत के समय जाति गायन प्रचार में था तथापि रागों का भी आरंभ हो चुका था। रागों के प्रयोग का समय भी उन्होंने बताया है। जो सात ग्राम, राग, भरत ने गिनाए है उनमें 'शुद्ध कैशिक अथवा कैशिक' ग्राम राग भी एक है।

'मुखे तु मध्यमग्रा: शडजप्रतिमुखे भवेत्।.....संहारे कैशिक प्रोक्त: पूर्वरङ्गे तुषाडव: ।५

ग्राम रागों के 5 प्रकार

1–शुद्ध ग्राम राग:– महर्षि भरत एवं शार्ङ्गदेव ने सात शुद्ध ग्राम राग कहे हैं। मतंग ने केवल 5 ग्राम रागों का वर्णन किया है किन्तु भरत के उस श्लोक का भी वर्णन किया है जिसमें सात ग्राम रागों के नाम मिलते है यथा–

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

'मुखे तु म/यमग्राम' षड़ज प्रतिमुखे भवेत——

मतंग द्वारा कहे गए इन पांच शुद्ध ग्राम रागों में षड़जग्राम एवं म/यमग्राम का स्थान नहीं है।

2–भिन्न ग्राम राग:– भिन्न ग्राम रागों के चार प्रकार बृहदेशी में कहे हैं।

1– स्वर भिन्न 2– जाति भिन्न 3– शुद्ध भिन्न 4– श्रुति भिन्न

भिन्न ग्राम रागों की जाति व ग्राम, शुद्ध ग्राम रागों के सम्मान है समस्त शुद्ध लक्षण भिन्न में जाएगा केवल उनमें गान शैली में भेद है। यथा– ''शुद्धस्य लक्षणं समग्र भिन्न कैशिक स्यापि .....।६

स्वर भिन्न:–

''यादवदी गृहीत: स्यात् संवादी च विमोक्षयते, विवादीवानुवादी वा स्वर भिन्न स उच्च्ते''[७]

अर्थात:– वादी स्वर का ग्रहण कर उसके सं ावदी का परित्याग किया जाए, विवादी अनुवादी का प्रयोग भी संवादी के समान किया जाए तो स्वर भिन्न है।

(ख) जाति भिन्न:– ''जाति के अंश न्यास, अल्पत्व बहुत्व का ग्रहण करने पर भी स्वर प्रयोग वक्र तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्वरों का ग्रहण होने से जाति भिन्न है। शुद्ध कैशिक मध्यम तथा भिन्न कैशिक मध्यम में इतना भेद हैं''८

(ग) शुद्ध भिन्न:–

''परित्यन्नन्ययजाति स्वजतिकुलभूषणं:
स्वकंकुलं तु संगृह्नन् शुद्ध भिन्न प्रकीतित: ॥[९]

भावार्थ:–अन्य जाति का परित्याग कर अपनी ही जाति और कुल (जाति से उत्पन्न राग) का ग्रहण करने वाला राग शुद्ध भिन्न है।

शुद्ध कैशिक और भिन्न कैशिक के स्वर, जाति आदि समान है केवल प्रथम, तारस्थान है तथा द्वितीय की व्याप्ति मंद्र स्थान में है। शुद्ध कैशिक, शुद्धागीति में तथा भिन्न कैशिक, भिन्ना गीति में गाया जाता है। जिस स्वस्थान में शुद्ध कैशिक का आलाप होता है उस स्वस्थान को छोड़कर भिन्न कैशिक का स्वरालाप करना चाहिए। मतंग के अनुसार:–

''भिन्न कैशिको मध्यम ग्राम सम्बंधकैशिकीकार्मारवी जात्युन्पनत्वात्।
ग्रहोंऽश षड़ज:। पंचमो न्यास: निषादोऽत्र काकली।
पूर्णश्चायम् शुद्ध कैशिक वदमं यद्यपि राग: तथापि भेदोऽस्ति।
मन्द्रबहुलोऽयम् येन स्वस्थानं शुद्ध कैशिके स्वरालाप: क्रियते
तत्स्वस्थानं हि विहाप तैरेव स्वरैलापे कर्तव्य:। शुद्ध कैशिके ही
तार स्वरैलाप कर्तव्य इति रूपान्यत्वेनायं भिद्यते।[१०]

(घ) श्रुति भिन्न:– ''जब चतुश्रुतिक स्वर का भिन्न प्रयोग होकर द्विश्रुतिक हो जाता है परन्तु (उसका संवादी स्वर) गान्धार द्विश्रुतिक रहता हो तो श्रुति भिन्न है।[११] उदारणार्थ राग भिन्न तान है जिसके विषय में आ0 बृहस्पति ने लिखा है:–

''भिन्नतान रागे हि षड़जस्य श्रुतद्वयं गृह्नति निषाद:

.....गान्धार द्विश्रुतिरैव। अतोऽस्य श्रुति भिन्नत्वम्।[१२]

अर्थात:–भिन्नतान राग में निषाद षड़ज की दो श्रुतियां ग्रहण करता है गान्धार द्विश्रुतिक ही रहता है। अत: भिन्नतान राग श्रुति भिन्न है। भिन्न गीति के अन्तर्गत पांच ग्राम रागों में भिन्न कैशिक मध्यम तथा भिन्न कैशिक के नाम आते है। शारंगदेव के अनुसार:–

''.....भिन्ना: स्यु: पंच कैशिकमध्यम: ॥ भिन्न षड़जश्य षडजाख्ये मध्यमे तान कैशिको भिन्न पंचम इत्येत .... ॥''[१३]

अर्थात:–भिन्न ग्राम राग पांच है, कैशिक मध्यम तथा भिन्नषड़ज, षड़जग्राम के अन्तर्गत तथा भिन्नतान, भिन्न कैशिक तथा भिन्न पंचम मध्यम ग्रामीय भिन्न राग है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

(क) षड़जग्रामीय ग्रामराग–कैशिक मध्यम, भिन्न षड़ज

(ख) मध्यमग्रामीय भिन्न ग्राम राग–भिन्नतान, भिन्न कैशिक तथा भिन्न पंचम।

3–गौड़ग्राम राग:– गौड़ ग्राम राग गौड़ी गीति से सम्बन्धत ग्राम राग है। गौड़ी गीति के लक्षण जिसमें हो वह गौड़ ग्राम राग है जैसे औहाटिललित स्वरों का मन्द्र में प्रयोग, बिना किसी अवग्रह के तीनो स्थानों (मध्य, मन्द्र और तार) में गमक युक्त स्वर प्रयोग। बृहदेशी में कहा है:–

''ओहाटी मन्द्रजोपाता प्रयोगे ध्वनिकम्पितै:।अविश्रामेण त्रिस्थाने गौड़ी गीतिरूदाहृता ॥''[१४]

गौड़ी रागों की कुल संख्या तीन कही है - ''**.....**गौड़ कैशिक मध्यम:। गौड़पंचम: षड़जे मध्यम गौड़कैशिक ॥[१५]

(क) मध्यमग्रामीय गौड़ राग: गौड कैशिक

(ख) षड़जग्रामीय गौड़ राग: गौड़ कैशिक मध्यम, गौड़ पंचम

4–वेसर ग्राम राग:– वेसरा अथवा रागगीति पर आधारित जो ग्राम राग है वे वेसरा ग्राम राग कहलाते है। इनमें वेसरा गीति के संपूर्ण लक्षण होंगे। इन रागों में स्वर का संचार वेगपूर्ण होता है। मतंग के कथनुनासर:–''स्वरा: सरन्ति यद्वेगात्तस्माद् वेसरका: स्मृता:[१६]

वेसर राग कुल आठ कहे गए है।

''——षड़जे टक्कवेसरषाड़वौ। ससौवीरो, मध्यते तु वोट्टमालवकैशिकौ।

मालव: पंचयमान्तोऽथ द्विग्रामष्टक्क कैशिक: हिन्दोलोष्टो वेसरास्ते — ॥[१७]

(क) षडजग्रामीय वेसर ग्राम राग – 1– टक्क 2– वेसर षाड़व 3– सौवीरी

(ख) मध्यमग्रामीय वेसर ग्राम राग –1–वोट्ट 2– मालवकैशिक 3– मालवपंचम

(ग) द्वि ग्रराम सम्बन्ध्ा वेसर राग –1– टक्क कैशिक 2– हिन्दौल

5–**साधारण ग्राम राग:** साधारणी गीति के अन्तर्गत सात ग्रात रागों में षड़ज कैशिक नाम का उल्लेख आता है।

''..... सप्त साधारणास्तत: ।षड़जे स्यादूरपसाधार: शको भम्माणपंचम: ॥
मध्यमे नर्तगान्धारपंचमौ षड़जकैशिक: ।द्विग्राम: ककुभस्त्रिशद् ग्रामरागा अमां मता: ॥१८

उपरोक्त उल्लेख में शारंगदेव ने जिन सात साधारण ग्राम रागों का उल्लेख किया है वे इस प्रकार है।

(क) षड़ज ग्रामीय साधारण ग्राम राग– 1–रूप साधार 2– शक 3– भम्माण पंचम।

(ख) मध्यम ग्रामीय साधारण ग्राम राग – 4– नर्त 5– गान्धार पंचम 6– षड़जकैशिक

(ग) द्विग्रामीय साधारण ग्राम राग – 7– ककुभ इस तरह शारंगदेव ने शुद्ध भिन्न गौड़ वेसर और साधारण कुल 30 ग्राम राग (7 शुद्ध 5 भिन्न 3 गौड़ 8 बेसर 7 साधारण) बताएं है।

उपरोक्त वर्णन से ज्ञात होता है, कि ग्राम रागों का परिचय देते समय उनके ग्राम भी निर्दिष्ट किए है। शुद्ध कैशिक राग मध्यमग्रामीय है तथा जब उसे अलग–2 गीतियों में गाया जाता है तो वह उस गीति की विशषताओं के साथ अपनी पूर्व ग्राम की अवस्था में होता है जैसे जब कैशिक को भिन्न गीति में गाया जाता है तो वह भिन्नकैशिक कहलाता है परन्तु उसका ग्राम शुद्धकैशिक वाला ही अर्थात मध्यम ग्राम ही रहेगा। मध्यम ग्रामीय कैशिक संज्ञा युक्त ग्राम राग: 1– शुद्ध कैशिक 2– भिन्न कैशिक 3– गोड़ कैशिक 4– मालव कैशिक 5– षड़ज कैशिक

भिन्नकैशिक ग्रामराग

शारंगदेव ने इस ग्राम का वर्णन इस प्रकार है:–

''कैशिकीकार्मारवीन्यामुद्र तो भिन्न कैशिक: ।षड़ज ग्रहांशपन्यास: सम्पूर्ण: काकली युक्त:।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

मन्द्र भूरिसंचारी प्रसन्नादि विभूषण: ।। षड़जादिमूर्छनो दानवीरे रौद्रेऽभुते रसे ।गेयोऽह्न:प्रथमे यामे शिशिरे शिववल्भ: ।। [१९]

अर्थात:– यह ग्राम राग कैशिकी तथा कार्मारवी जाति से उत्पन्न हुआ है। इसमें षड़ज ग्रह, अंश और अपन्यास है। यह राग सम्पूर्ण है। इसमें काकली स्वरों का प्रयोग होता है, यह प्रसन्नादि अंलकार से विभूषित है। मूर्च्छना षड़जादि है वीर एवं रौद्र रस की निष्पति होती है। शिशिर ऋतु में यह राग दिन के प्रथम प्रहर में गेय है।

गौड़ कैशिक ग्राम राग

गौड़ कैशिक राग कैशिकी तथा षड़जमध्यमा से उद्गत हुआ है। षड़ज ग्रह और अंश स्वर है। इसमें काकली स्वर का प्रयोग होता है। इसका न्यास स्वर पंचम है तथा यह पूर्ण राग है। षड़जादि मूर्च्छना है और यह आरोही वर्ण में प्रसन्नादि अंलकार से विभूषित है यह वीर एवं रौद्र रसो की निष्पति करता है तथा दिन के दूसरे प्रहर में, शीत ऋतु में गेय है यह राग शंकर को प्रिय है। निशंक के शब्दों मे:–

''उद्भूत: कैशकीषड़जमध्यमाभ्यां–ग्रहांशस: सकाकली: पंचमान्त: पूर्ण: शडजादिमूर्छन: रोहिणि प्रसन्नादिभूषित: करूणे रसे।

वीर रोद्रेऽद्भूते गेय शिशिरे शंकर प्रिय दिनस्य मध्यमे यामे द्वितीये गौड कैशिक: ।।[२०]

यह कहा गया है कि गौड़ कैशिक मध्यम ग्रामीय राग है शार्ङ्गदेव द्वारा इस राग का जो परिचय हमने उल्लेखित किया है उसमें इस राग की उत्पति कैशिकी तथा षड़जमध्यमा से बताई गयी है। यह दोनों जातियां विभिन्न ग्रामीय है। षड़ज मध्यमा षड़जग्राम से सम्बन्धत है तथा कैशिकी मध्यम ग्राम से। यह परस्पर विरोधी विचार है।

इस विषय पर डा0आ0के0 शरींगी ने टीका करते कहा है–

'It has been stated (of. S. R. II I II) that Gaudkaishika belogns to the Madhyama-grama; but here it is said to have arisen from Kaishiki and Shudajmadhyma Jatis, which indicates that it belongs to both the Gramas' since the two parent Jati's respectively belongs to Madhyam Gramas and the Shadaj grama. Therefore, there seems to be an obvious, contradiction, as pointed out by 'K' which is resolved by him in the light of Matanga who says Even though derived from Jati of both grama is related to Madhyam Grama only, since in practice its Panchama and Dhaivata are respectively found to be of three and four shrutis, its advent from Shadajmadhyam is however inferred from the statement of Matangas. (as quoted by 'K') 'its initial note is mandra (Low) and not Madhyama, which indicated is Murchhna commencing with shadaj is probably ment to be UTTARMANDRA and thus its relationship to Shadaj Grama is implied" that how 'K" attempts to explain the above contradiction."२१

षड्जकैशिक ग्राम राग

शार्ङ्गदेव ने 'षड़ज कैशिक' ग्राम राग के लक्षण इस प्रकार कहें है कि इस जाति में षड़ज और ग्रह एवं अंश स्वर है, यह कैशिकी जाति से उत्पन्न हुआ राग है। ऋषभ का अल्प प्रयोग है और गान्धार एवं निषाद न्यास के स्वर है। मन्द्र गान्धार और षड़ज का प्रयोग होता है। अवरोही वर्ण, प्रसन्नादि अलंकार तथा षड़जादि मूर्च्छना है वीर, अद्भूत और रौद्र रसयुक्त राग है इस देवता 'भगवान शिव' को माना है।

''शडजर्षभांशग्रह स्यात् कैशिकी जाति संभव:।
ऋषभोऽल्पो निगन्यासो मन्द्रगान्धारषड़जक:।
प्रसन्नाध्वरोहिभ्यां युक्त: षड़जादिमूर्छन:
वीर रौद्राद्भुतरस: शांभव: षड़जकैशिक।''[२२]

संदर्भ सूची

१– संगीत रत्नाकर भाग 2, शारंगदेव (डा0आर0के0 शरींगी)–पृ03
२– संगीतशास्त्र, के वासुदेव शास्त्री–पृ074
३– संगीत रत्नाकर भाग 2, शार्ङ्गदेव (डा0आर0के0 शरींगी)–पृ03
४– स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0 इन्द्राणी चक्रवती–पृ0404

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

५– स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0 इन्द्राणी चक्रवती, पृ0–403
६– बृहदेशी 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)–पृ098
७– बृहदेशी 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा) पृ098
८– स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान, डा0इन्द्राणी चक्रवती–पृ0408
९– बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेम लता शर्मा)–पृ098
१०– बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)–पृ098
११– स्वर और रागों के विकास में वाद्यों का योगदान डा0 इन्द्राणी चक्रचवती–पृ0408
१२– भरत का संगीत सिद्धान्त, आ0के0सी0डी0 बृहस्पति–पृ0222
१३– संगीत रत्नाकर भाग 2, पं0 शारंगदेव (डा0आर0के0 शरींगी)–पृ06
१४– बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)–पृ0104
१५– संगीत रत्नाकर भाग 2, पं0 शारंगदेव (डा0आर0के0शरींगी)–पृ06
१६– बृहदेशी भाग 2, मतंग (डा0 प्रेमलता शर्मा)–पृ0108
१७– संगीत रत्नाकर भाग 2, शारंगदेव (डा0आर0के0शरींगी)–पृ06
१८– संगीत रत्नाकर भाग 2, शारंगदेव (डा0आर0के0शरींगी) पृ06
१९– संगीत रत्नाकर भाग 2, पं0 शारंगदेव (डा0आर0के0 शरींगी)–पृ030
२०– संगीत रत्नाकर भाग 2, शारंगदेव (डा0आर0के0 शरींगी)–पृ0 37
२१– संगीत रत्नाकर भाग–2 शार्ङ्गदेव (डा0आर0के0 शरींगी)–पृ059
२२– संगीत रत्नाकर भाग–2 शार्ङ्गदेव (डा0आर0के0 शरींगी)—— पृ0 57